B.A Part-1 Political Science (Hons) 1st Paper

दबाव समूह Pressure Groups

विश्व की राजनीतिक रंगमंच पर दबाव समूह का एक महत्वपूर्ण स्थान हो गया है। आधुनिक युग में यह लोकतंत्र का एक आवश्यक अंग माना जाता है। राज-व्यवस्था में इन हितों और गतिविधियों का उचित प्रति-निधित्व करने के उद्देश्य से दबाव समूहों का उदय और विकास हुआ। राज व्यवस्था में दबाव समूहों का अस्तित्व कोई नूतन तथ्य नहीं है। हमेशा से सभी प्रकार के समाज और शासन व्यवस्था में दबाव समूह विद्यमान रहा है At present दबाव समूहों के प्रसंग में नवोदित तत्व और तथ्य केवल यही है कि वे राजनीति में एक संस्था के रूप में कार्यरत है। जिसे Prof. S.E फाइनर ने 'अज्ञात समाज' (Anonemous Empire) की संज्ञा दी है।

नामकरण सम्बन्धी मतभेद- राजनीतिशास्त्र की अन्य अनेक अवधारणाओं की भाँति ही दबाव समूह की अवधारणा भी पर्याप्त विवादग्रस्त है विविध विचारकों ने इसके लिए अलग-अलग नामों का प्रयोग किया है बहुलवादी लेखक इन्हें दबाव समूह के स्थान पर केवल समूह कहना पसन्द करते हैं तो कुछ विद्वान इन समूहों के लिए Lobby Groups या Associations आदि शब्दों का प्रयोग किया है एक अन्य वर्ग उन विद्वानों का है जिन्होंने इसे 'समूह' या दबाव समूह न कहकर 'हित समूह' Interest Groups कहना उचित समझा है समूहों द्वारा अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए दबाव समूह संवैधानिक व औचित्यपूर्ण होना आवश्यक नहीं है अतएव इन समूहों को 'दबाव समूह' कहा जाना आपत्तिजनक प्रतीत नहीं होता। इस प्रकार दबाव समूह नाम ही सर्वाधिक उपयुक्त है और इस विषय के अधिकांश विद्वानों द्वारा इस शब्द का ही प्रयोग किया गया है।

वस्तुतः हित समूह और दबाव समूह में सूक्ष्म भेद ही है। प्रत्येक देश और समाज में सैकड़ों हित समूह विद्यमान होते हैं, किन्तु जब कोई समूह सत्ता को प्रभावित करने के उद्देश्य से राजनीतिक दृष्टि से सक्रिय हो जाता है तो वह दबाव समूह बन जाता है। राजनीतिक विज्ञान में उपर्युक्त समूहों की राजनीतिक सक्रियता का ही अध्ययन किया जाता है।

दबाव समूह – परिभाषा और लक्षण :- दबाव समूह हितों के साथ जुड़े हुए ऐसे शक्ति संगठन होते हैं जो अपने सदस्यों के हितों की रक्षा हेतु सार्वजनिक नीतियों को प्रभावित करने की चेष्टा करते रहते हैं।

ओडीगार्ड के अनुसार "दबाव समूह ऐसे लोगों का औपचारिक संगठन है जिसके एक अथवा अधिक सामान्य उद्देश्य या स्वार्थ होते है और जो घटनाओं के क्रम को विशेष रूप से सर्वाधिक नीति के निर्माण और

Scanned with CamScanner

प्रशासनिक कार्यों को इसलिए प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं कि वे अपने हितों की रक्षा एवं वृद्धि कर सकें।" मायरन वीनर के शब्दों में हित या दबाव समूहों से हमारा तात्पर्य शासन के ढाँचे के बाहर स्वैच्छिक रूप से संगठित ऐसे समूहों से होता है जो प्रशासनिक अधिकारियों नामजदगी और नियुक्ति, विधि निर्माण और सार्वजनिक नीति के क्रियान्वयन को प्रभावित करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

Prof. Madan Gopal Gupta के अनुसार दबाव समूह वास्तव में एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा सामान्य हित वाले व्यक्ति सार्वजनिक मामलों को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं। इस अर्थ में ऐसा कोई भी सामाजिक समूह जो प्रशासकीय और विधायी दोनों प्रकार ही प्रकार के निर्णयकर्त्ताओं को सरकार पर प्रत्यक्ष नियंत्रण प्राप्त करने की चेष्टा किए बिना ही प्रभावित करना चाहता है जो दबाव समूह कहलाएगा। एच० जेगलर के शब्दों में- दबाव समूह ऐसा संगठित समूह है जो अपने सदस्यों को सरकारी पदों पर बिठाए बिना सरकारी निर्णयों को प्रभावित करने की इच्छा रखते हैं।

आसान अर्थों में समझने के लिए दबाव गुटों की सार्वजनिक नीति को प्रभावित करने के उद्देश्य से निर्मित गैर सरकारी समूह कहा जा सकता है For example औद्योगिक, व्यवसायी, वाणिज्यिक, श्रमिक और अन्य वर्गों के लिए समूह विधि निर्माण और प्रशासनिक कार्यों को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं जिससे कि वे अपने हितों में कानून बनवा सकें या अपने हितों को हानि पहुँचाने वाले विधेयकों को वापस लेने के लिए अथवा उनमें आवश्यक परिवर्तन करवाने के लिए प्रयत्न कर सकें तथा प्रशासनिक कार्यों को प्रभावित कर सकें। इस प्रकार दबाव समूह अपने सदस्यों के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक, विशेषतया उनके आर्थिक और व्यवसायिक हितों की रक्षा तथा वृद्धि में संलग्न रहते हैं।

दबाव समूह के लक्षण - के संबंध में अब तक उपर्युक्त विचारों के आधार पर दबाव समूह के निम्नलिखित लक्षण बताए जा सकते हैं। (1) सीमित उद्देश्य - दबाव समूह के एक या विशेष कुछ निश्चित लक्ष्य होते हैं और दबाव समूह के द्वारा अपनी गतिविधियाँ सामान्यतः इस विशेष लक्ष्य तक सीमित रखी जाती है।

(2) औपचारिक या अनौपचारिक रूप में संगठित -

Scanned with CamScanner

दबाव समूह के लिए राजनीतिक दल के समान औपचारिक रूप में संगठित होना आवश्यक नहीं है, ये अनेक औपचारिक रूप से संगठित हो सकते हैं जिन्हें सामान्य व्यक्ति असंगठित कहते हैं For example भारत की वर्तमान राजनीति में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) एक औपचारिक रूप में संगठित दबाव समूह है और एक बहुत अधिक शक्तिशाली लेकिन अनौपचारिक दबाव समूह।

3- सीमित एवं परस्पर व्यापी सदस्यता - दबाव समूहों का सामान्यतः वर्गीय हितों से सम्बन्ध होता है और स्वाभाविक रूप से इनकी सदस्यता सीमित होती है है अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (INTUC) की सदस्यता मात्र श्रमिक वर्ग को और वाणिज्य मण्डल की सदस्यता मात्र व्यापारिक वर्ग को ही प्राप्त रहती है।

दबाव समूहों की सदस्यता परस्पर व्यापी भी होती है। एक व्यक्ति एक ही समय पर अनेक दबाव समूहों का सदस्य हो सकता है उदाहरण के लिए वह जातिगत समूहों, उपभोक्ता समूहों, मोहल्ला संघ और शिक्षक संघ या श्रमिक संघ या अन्य दबाव समूह का भी सदस्य हो सकता है।

4- संवैधानिक और असंवैधानिक साधनों का प्रयोग - विशेष हितों की पूर्ति ही सबसे प्रमुख लक्ष्य होने के कारण दबाव समूह के द्वारा आवश्यकतानुसार उचित और अनुचित, संवैधानिक, असंवैधानिक सभी प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जाता है

5- राजनीति और प्रशासन में परोक्ष भूमिका - दबाव समूह का शासन पर अधिकार स्थापित करने का कोई लक्ष्य नहीं होता, इसलिए वे राजनीति और प्रशासन में प्रत्यक्ष भूमिका नहीं निभाते हैं इस आधार पर कई बार ये समूह अपको Non political, Non Govt organisation बताते हैं, लेकिन वस्तुतः दबाव समूह राजनीति और प्रशासन से अलग नहीं होते, वे पर्दे के पीछे रहकर राजनीति, राजनीतिक निर्णयों और प्रशासनिक कार्यों को प्रभावित करने की निरन्तर चेष्टा करते हैं ये समूह चुनाव नहीं लड़ते और न ही चुनाव में औपचारिक रूप में उम्मीदवार खड़े करते हैं, किन्तु वे दलों द्वारा चुनाव में उम्मीदवारों के नामांकन को प्रभावित करते हैं तथा अपने हितों के समर्थक उम्मीदवारों को धनराशि देकर तथा अन्य प्रकार से सहयोग देते हैं वे विधायक, सांसद नहीं बनना चाहते, परन्तु विधायकों, सांसदों के निर्णयों को प्रभावित करते हैं। वे शासन से बाहर रहकर प्रशासनिक अधिकारियों के निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

Scanned with CamScanner

प्रो० जौहरी के अनुसार दबाव समूह राजनीति के साथ लुका-छिपी का खेल खेलते हैं वे राजनीति में हैं भी और नहीं भी हैं वस्तुतः दबाव समूहों की राजनीतिक क्रिया अभिमुखी ही होते हैं। दबाव समूह बिना उत्तरदायित्व वहन किए सत्ता के संघर्ष और सत्ता के लाभों के लिए सचेष्ट रहते हैं इस कारण कुछ आलोचकों द्वारा इन्हें अनुत्तरदायी राजनीतिक दल भी कहा गया है।

6- अनिश्चित कार्यकाल – दबाव समूह बनते और समाप्त होते रहते हैं। किसी हित विशेष की पूर्ति के लिए अस्तित्व में आने के कारण हित की पूर्ति के साथ ही इनका समाप्त हो जाना स्वाभाविक है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक समाज की प्रकृति परिवर्तनशील होती है अतः एक विशेष दबाव समूह को स्थापना के कुछ समय बाद अनुपयोगी समझ कर भी उसे भंग किया जा सकता है।

7- सर्वव्यापक प्रकृति – दबाव समूह सभी प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाओं में पाये जाते हैं, यहाँ तक की सर्वाधिकारवादी और स्वेच्छाचारी राज-व्यवस्थाओं में भी। दबाव समूहों का स्वरूप किसी देश विशेष की सामाजिक और राजनीतिक विकास की स्थिति के अनुसार परिवर्तित होता रहता है इनके विकास का एक क्रम होता है और ज्यों-ज्यो समाज अविकसित अवस्था से विकसित अवस्था की ओर बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों समाजिक साम्प्रयायिक समूहों की तुलना में संघात्मक समूहों (Associational Groups) का विस्तार बढ़ता जाता है।

दबाव समूहों द्वारा अपनाए गए कार्य-प्रणाली या तरीके

अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए दबाव समूहों द्वारा विभिन्न युक्तियाँ या तरीके अपनाए जाते हैं जिनमें प्रमुख निम्न हैं:-

(1) Lobbying – का सामान्य अर्थ है विधानमण्डल के सदस्यों को प्रभावित कर उनसे अपने हित में कानून का निर्माण करवाना। लॉबिंग में व्यवस्थापिका के अधिवेशन के समय किसी विशेष विधेयक को विधि में परिणत करवाने या न करवाने में रुचि ली जाती है। इसके अलावे प्रतिनिधि मण्डल, शिष्ट मण्डल, पत्र, तार टेलीफोन, मेल, मैसेज, वाट्सएप, फेस बुक, बैनर, पोस्टर धरना, प्रदर्शन आदि साधनों को भी अपनाया जाता है। U.S.A में इसका महत्व इतना बढ़ गया है कि Lobby (लॉबी कक्ष) को कभी-2 विधान मण्डल का तीसरा सदन कहते हैं। इस कार्य हेतु अनेक समूहों के बड़े-2 कार्यालय, हजारों अधिकारी व कर्मचारी लगे रहते हैं।

(2) प्रचार व प्रसार के साधन – अपने उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए जनता में अपने पक्ष में सद्भावना का निर्माण करने के लिए

Scanned with CamScanner

और उद्देश्य प्राप्ति में सहायक सिद्ध होने वाले लोगों के दृष्टिकोण को अपने पक्ष में करने के लिए ये विभिन्न दबाव समूह या प्रभावशाली संगठन, प्रेस रेडियो, टेलीविजन, इन्टरनेट, सोशल मिडिया, बैनर, पोस्टर और सार्वजनिक सम्बन्धों के विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोग करते हैं।

(3) आकड़े प्रकाशित करना - नीति निर्माताओं के समक्ष अपने पक्ष को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए दबाव समूह आकड़े प्रकाशित करते है, ताकि अपने बात को पूरा करवा या मनवा सके।

(4) गोष्ठियाँ आयोजित करना - आज कल दबाव समूह विचार विमर्श तथा वाद-विवाद के लिए गोष्ठियाँ, सेमिनार तथा भाषणमालाएँ एवं वार्ताएं आयोजित करते हैं और उन्हें अपने मत से प्रभावित करने का प्रयास करते हैं।

(5) रिश्वत, बेईमानी या अन्य उपाय - अपने ध्येयों की रक्षा के लिए दबाव समूह रिश्वत व घूस देने से भी नहीं कतराते। बेईमानी के तरीकों का भी यथासम्भव प्रयोग करते हैं तथा विरूद्ध हितों को अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए बदनाम भी करवा देते हैं। कहीं-कहीं पर तो आवश्यकतानुसार सुरा और सुन्दरी का भी प्रयोग करते हैं। व्यवसायिक दबाव समूह धन खर्च कर अपने साध्यों की प्राप्ति में लगे रहते हैं। आधुनिक उपायों के प्रयोग में व्यवसायिक दबाव समूह अन्य दबाव समूहों से सदैव आगे रहते हैं।

(6) न्यायालय की शरण - जब दबाव समूह के समस्त प्रयत्नों के बावजूद उनके हितों को आघात पहुँचाने वाले कानून पारित हो जाता है, तब दबाव समूह न्यायालय में याचिका प्रस्तुत कर अपने पक्ष में निर्णय करवाने का प्रयास करते हैं

(7) संसद-सदस्यों के मनोनयन में रूचि - दबाव समूह ऐसे व्यक्तियों को चुनावों में दलीय प्रत्याशी मनोनित करवाने में मदद देते हैं जो आगे चलकर संसद में उनके हितों की अभिवृद्धि में सहायक हो। ऐसा कहा जाता है कि लोकतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था में संसद-सदस्य दबाव समूहों की जेब में होते हैं। चुनाव में संसद-सदस्यों को पैसा चाहिए और अनेक बार यह पैसा दबाव समूह उपलब्ध करवाते हैं।

Scanned with CamScanner